**मानुख जो अवतारु, कंहिं मिलियो पूरन पुन ते,**
**तंहिंजी करियां केतिरी, वड़ाई विसतारु,**
**सहस्नि में सामी चए, को ज़ाणे संतु सचारु,**
**कयो जंहिं दीदारु, गुरगम परिची पांहिंजो.**

***अनमोल मनुष्य-जन्म की महत्ता का उल्लेख करते हुए महाकवि सामी कहते हैं, ''मनुष्य के रूप में जन्म मिलना किसी पूर्व पुण्य का फल है। मनुष्य जन्म की महिमा का विस्तारपूर्वक वर्णन कैसे करूँ ? हजारों में कोई विरला संत होगा, जिसको इसका ज्ञान होगा। अर्थात् जिसने अपने सद्गुरु के द्वारा प्राप्त अंतर्ज्ञान द्वारा अपने (स्वरूप के, अंतरात्मा के) दर्शन किये होंगे।''***

मनुष्य-जन्म हीरे के समान अनमोल माना गया है। चौरासी लक्ष योनियों में भटकने के बाद किसी पुण्यवान प्राणी को मनुष्य देह प्राप्त होती है। यह सभी जन्मों में श्रेष्ठ है। इस देह में परमात्मा का निवास है। आत्माराम/पुरुषोत्तम परमेश्वर सभी देहों में रहता है। आत्मा को धारण करने के लिए मनुष्य देह की आवश्यकता होती है। देह के कारण ही आत्मा टिक पाती है। देह और आत्मा के संगम से संसार में बड़े बड़े कार्य होते रहते हैं। मानव देह होने से ही मुख्य परमात्मा की प्राप्ति होती है। देह के कारण कर्मयोग, उपासना मार्ग एवं ज्ञानमार्ग अथवा भक्तिमार्ग आदि का आचरण होता है। योगी, वैरागी, तपस्वी, साधु-संत आदि इस दुर्लभ देह द्वारा ही प्रयत्न करते रहते हैं। आत्मा को भी देह/शरीर धारण कर प्रकट होना पड़ता है। शरीर के कारण ही यह लोक और परलोक सार्थक होता है। अर्थात् देह बिना सब निरर्थक है। किसी पुण्य से प्राप्त इस शरीर द्वारा ही दान-धर्म किया जा सकता है। देह मानो विश्व रूपी वृक्ष का सब से उत्तम फल है। देह के कारण ही मनुष्य भक्ति कर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि देह का अतीव महत्व है। सगुण परमेश्वर को भी अवतार लेने के लिए देह की ही आवश्यकता होती है।

सामी साहब भी इसी मनुष्य-जन्म और मानव शरीर की महिमा का वर्णन करते हैं। मनुष्य जन्म मिलना दुर्लभ है और किये हुये किसी बड़े पुण्य का फल भी। सिंधी संत कवि सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी के शब्दे में-

**मोक्ष-मंदिर का द्वार, मानुष चोला है।**
**आनंद का आगार, मानुष चोला है।**
**भक्ति का भंडार, मानुष चोला है।**
**ज्ञान-ध्यान गुलजार चोला है।**

■